एपल बंद करेगा चीन के बाहर के सभी स्टोर

सैन फ्रांसिस्को : अग्रणी स्मार्टफोन और तकनीकी उत्पाद निर्माता कंपनी एपल ने चीन से बाहर के अपने सभी स्टोर बंद करने की घोषणा की है। कोरोना वायरस के प्रकोप के चलते ये स्टोर्स इस महीने की 27 तारीख तक बंद रहेंगे। कंपनी ने कहा है कि लगातार फैल रहे कोरोना के प्रभाव से अपने कर्मचारियों को बचाने के लिए उसने स्टोर्स बंद करने का फैसला किया है। इस दौरान कंपनी ने कहा कि एपल के ऑनलाइन स्टोर्स खुले रहेंगे। कंपनी ने कहा कि ऑफिस में काम करने वाले लोग घर से काम कर सकेंगे। (एएफपी)

कोरोना के चलते हवाई यात्रियों की संख्या में 15-20 परसेंट की कमी आने की आशंका है। हालांकि देश का विमानन उद्योग जल्द ही इससे उबरकर विकास के रास्ते पर लौट आएगा।
– हरदीप सिंह पुरी, नागरिक विमानन मंत्री

तीन दिनों में हट जाएगी यस बैंक से पाबंदी

राहत ▶ बुधवार से समाप्त हो जाएगी निकासी सीमा, 100 से अधिक शेयरों के निवेश पर तीन वर्षों का लॉक-इन

एसबीआइ सहित कई निजी बैंक खरीद रहे हैं इसमें हिस्सेदारी

नई दिल्ली, प्रेट्र : सरकार ने यस बैंक के ग्राहकों को राहत देते हुए तीन दिन में निकासी पर पाबंदी हटाने की घोषणा की है। सरकार द्वारा जारी अधिसूचना के मुताबिक बुधवार यानी 18 मार्च से 50 हजार रुपये की निकासी सीमा हटा ली जाएगी। इसके साथ ही प्रशांत कुमार इस महीने के अंत तक बैंक के नवगठित बोर्ड के सीईओ और एमडी का कार्यभार संभाल लेंगे।

सरकार द्वारा जारी यस बैंक के रिकंस्ट्रक्शन प्लान के मुताबिक भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआइ) इस निजी बैंक में तीन वर्ष तक के लिए अपनी हिस्सेदारी 26 परसेंट से नीचे नहीं ला सकेगा। इसके साथ ही अन्य निवेशक और पहले से मौजूद निवेशकों का 75 परसेंट निवेश तीन वर्ष के लिए लॉक रहेगा। इस दौरान वह बैंक से अपना निवेश निकाल नहीं सकेंगे। हालांकि 100 से कम शेयर रखने वाले निवेशकों पर लॉक-इन पीरियड का नियम लागू नहीं होगा। यस बैंक के प्रस्तावित बोर्ड में पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) के पूर्व गैर-कार्यकारी चेयरमैन सुनील मेहता समेत महेश कृष्णमूर्ति और अतुल भेडा को भी शामिल किया जाएगा। अधिसूचना के मुताबिक बैंक की रिकंस्ट्रक्शन स्कीम 13 मार्च से प्रभाव में मानी जाएगी। इससे पहले केंद्रीय बैंक ने संकटग्रस्त यस बैंक पर 50,000 रुपये से अधिक की निकासी पर रोक लगा दी थी। इसके अलावा इस पर कई और पाबंदियों का एलान किया गया था।

एसबीआइ समेत छह बैंकों ने अब तक यस बैंक में निवेश का फैसला किया है। प्रतीकात्मक

रिकंस्ट्रक्शन प्लान के मुताबिक सरकारी कर्जदाता एसबीआइ इसमें 49 परसेंट की हिस्सेदारी खरीदेगा। जबकि दूसरे वित्तीय संस्थानों को भी हिस्सेदारी बेची जाएगी। यस बैंक का पूंजी आधार 1,100 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 6,200 करोड़ रुपये कर दिया गया है।

ये बैंक करेंगे निवेश : योजना के मुताबिक आइसीआइसीआइ बैंक इसमें 1,000 करोड़ रुपये की लागत से पांच फीसद हिस्सेदारी खरीदेगा। एचडीएफसी बैंक ने भी पांच फीसद हिस्सेदारी लेने का फैसला किया है। एक्सिस बैंक ने 60 करोड़ शेयर 600 करोड़ रुपये में खरीदने का प्रस्ताव अपने बोर्ड से पारित करवाया है। कोटक महिंद्रा 50 करोड़ शेयर 10 रुपये मूल्य की दर से 500 करोड़ रुपये में खरीद रहा है। इसके अलावा बंधन बैंक और फेडरल बैंक ने भी यस बैंक में 300-300 करोड़ रुपये के निवेश करने का फैसला किया है।

लॉक-इन पीरियड पर विवाद के आसार

नई दिल्ली, आइएएनएस : संकटग्रस्त निजी कर्जदाता यस बैंक के रिकंस्ट्रक्शन प्लान में लॉक-इन पीरियड लागू करने के फैसले को कानूनी विवाद का सामना करना पड़ सकता है। सरकार द्वारा पेश योजना के मुताबिक बैंक के नए और पुराने शेयरधारक तीन वर्ष तक अपने कुल निवेश की 75 परसेंट हिस्सेदारी को नहीं निकाल सकेंगे। हालांकि 100 से कम शेयर रखने वाले निवेशकों पर लॉक-इन का यह नियम लागू नहीं होगा।

जानकारों के मुताबिक आंशिक शेयरधारक इस प्रावधान के खिलाफ कोर्ट का रुख कर सकते हैं। सरकार द्वारा प्रस्तावित रिकंस्ट्रक्शन प्लान में कहा गया है कि यस बैंक के सभी नए और पुराने शेयरधारक जिनकी शेयधारिता 100 से अधिक है, तीन वर्ष तक अपने कुल निवेश का 75 हिस्सा बेच नहीं सकेंगे। यस बैंक के स्थायित्व और निवेशको के हित को ध्यान में रखते हुए सरकार ने यह फैसला लिया है।

लॉक-इन पीरियड के प्रावधान से बैंक को स्टॉक्स में शॉर्ट सेलिंग जैसी समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। जानकारों का कहना है कि यस बैंक में 91.67 परसेंट सार्वजनिक हिस्सेदारी है। इसमें दो लाख व्यक्तिगत निवेशकों के पास 43.66 परसेंट हिस्सेदारी है। इस तरह से बैंक में खुदरा निवेशकों की संख्या बहुत अधिक है। लॉक-इन के प्रावधान के चलते इन निवेशकों को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। हालांकि एसबीआइ सहित कई अन्य बड़े बैंकों द्वारा यस बैंक में निवेश करने से इसको स्थायित्व और मजबूती मिलने की उम्मीद है। इसके साथ ही बैंक का मूल्यांकन भी बढ़ेगा, जिससे खुदरा निवेशक बाद में बिना नुकसान उठाए अपनी हिस्सेदारी बेच सकेंगे।

कोरोना के कहर का मारुति के उत्पादन पर नहीं असर

आदित्य राज, गुरुग्राम

▶ कंपनी के चेयरमैन ने कहा – उत्पादन पहले की तरह सामान्य

▶ कोरोना को लेकर बनी दहशत जल्द खत्म होने की उम्मीद

पूरी दुनिया में दहशत पैदा करने वाले कोरोना वायरस का असर फिलहाल देश की सबसे बड़ी कार कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड के उत्पादन पर नहीं है। मारुति सुजुकी इंडिया के चेयरमैन आरसी भार्गव ने दैनिक जागरण से बातचीत में कहा कि पहले की तरह ही उत्पादन सामान्य है। सहयोगी कंपनियां कुछ कंपोनेंट बाहर के देशों से मंगाती हैं। लेकिन उसके ऊपर भी फिलहाल कोई असर नहीं दिख रहा है।

भार्गव का कहना था कि भविष्य में इस वायरस का संकट किधर जाता है, इस बारे में इस वक्त नहीं बता सकता। जहां तक बात कंपोनेंट के उत्पादन की बात है तो अब देश के भीतर सभी प्रकार के कंपोनेंट का उत्पादन होने लगा है। वैसे, उम्मीद है कि जल्द ही कोरोना वायरस को लेकर जो दहशत की स्थिति बनी हुई है, वह खत्म होगी। केंद्र सरकार ने बहुत ही सख्त कदम उठाए हैं। सभी संस्थान अपने स्तर पर भी ध्यान देने लगे हैं। मारुति के सभी संयंत्रों में काफी एहतियात बरती जा रही है। दुनिया के देशों से भारत की तुलना नहीं हो सकती। भारत के लोगों के भीतर अपने आपको संभालने की असीम क्षमता है। यही वजह है कि जो समस्याएं दूसरों देशों में बहुत बड़ी दिखाई देती हैं वह भारत में बौनी दिखाई देती हैं। कोरोना वायरस को लेकर लोगों में इतनी जागरूकता आ चुकी है कि बच्चे भी ध्यान देने लगे हैं।

असर लंबा रहा, तो होगा भारी नुकसान

ऑटो कंपोनेंट क्षेत्र की कंपनी मुंजाल शोवा ग्रुप के सीएमडी योगेश मुंजाल का कहना है कि कोरोना वायरस का असर यदि लंबा खींचा तो भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है। असर लंबा होने से लोग कार या बाइक खरीदने पर ध्यान नहीं देंगे। सबसे बड़ी बात यह है कि कोरोना वायरस के डर से लोगों ने घर से बाहर निकलना कम कर दिया है। जब बाहर ही नहीं निकलेंगे फिर खरीदारी कैसे करेंगे।

बाइक एवं कार की डिमांड कम होने पर निश्चित रूप से मुख्य कंपनियों का उत्पादन गिरेगा। जब मुख्य कंपनियों का उत्पादन गिरेगा वैसी स्थिति में कंपोनेंट तैयार करने वाली कंपनियों का उत्पादन गिरेगा। इसका असर पूरे देश में व्यापक स्तर पर दिखाई देगा। वैसे उम्मीद है कि जल्द ही कोरोना वायरस की दहशत से देश बाहर निकलेगा।

न्यूज गैलरी

कोरोना की वजह से शेयर बाजारों में गिरावट

नई दिल्ली : प्रिंसिपल इकोनॉमिक एडवाइजर संजीव सान्याल ने कोरोना को घरेलू शेयर बाजारों में भारी गिरावट की वजह बताया है। उन्होंने कहा कि कोरोना के चलते डर का माहौल बन गया है, जिससे ग्लोबल और घरेलू शेयर बाजारों में बड़ी गिरावट देखी जा रही है। इस दौरान सान्याल ने बताया कि सरकार कोरोना के प्रभाव को कम करने के लिए सभी संभव कदम उठा रही है। कोरोना के चलते भारत और चीन के बीच होने वाले आयात-निर्यात में भारी कमी देखने को मिल रही है। सान्याल ने बताया कि वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कुछ सप्ताह पहले ही इस संबंध में महत्वपूर्ण कदम उठाए थे। इस दौरान वह कारोबार जगत के लोगों से लगातार बैठक करती रही हैं। (एएनआइ)

अमेरिकी शेयर बाजारों में लौटी रौनक

न्यूयॉर्क : पिछले कुछ दिनों से लगातार गिरावट का सामना कर रहे अमेरिकी शेयर बाजारों में शुक्रवार को रौनक लौट आई। इस दौरान डाऊ जोन्स 1,985 अंकों की बढ़त दर्ज करने में सफल रहा। अमेरिकी शेयर बाजारों में यह उछाल वहां के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा कोरोना के चलते नेशनल एमरजेंसी घोषित करने के बाद देखने को मिला। कारोबार के आखिरी एक घंटे के दौरान डाऊ जोन्स में पूरे दिन की तुलना में दोगुना उछाल देखने को मिला। ज्ञात हो कि अमेरिकी शेयर बाजारों में वर्ष 2008 के बाद यह परसेंट में सबसे बड़ा उछाल है। (एपी)

जस्टिस भट बने एनक्लैट के कार्यवाहक चेयरमैन

नई दिल्ली : सरकार ने जस्टिस बंशी लाल भट को नेश[illegible]ल कं[illegible] लॉ अपीलेट ट्रिब्यूनल (एनक्लै[illegible]) का कार्यवाहक चेयरमैन नियुक्त किया गया है। [illegible] जस्टिस मुखोपाध्याय के सेवानि[illegible]त होने के बाद इस पद पर नियुक्त हुए हैं। 70 वर्षीय जेएस मुखोपाध्याय शुक्रवार को अपने पद से रिटायर हुए थे। जस्टिस [illegible] जम्मू कश्मीर हाईकोर्ट के पूर्व न्यायाधी[illegible] हैं। उन्हें एनक्लैट के चेयरमैन पद पर तीन महीने के लिए [illegible] है। (प्रेट्र)

गुरुग्राम की 450 आइटी कंपनियों में 'वर्क फ्रॉम होम'

▶ साइबर सिटी में आइटी एवं आइटी इनेबल्ड सेक्टर की 600 से अधिक कंपनियां हैं

▶ 31 मार्च तक फोन या वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बात करने की एडवाइजरी

प्रतीकात्मक

जागरण संवाददाता, गुरुग्राम

कोरोना वायरस की मार सबसे अधिक आइटी एवं आइटी इनेबल्ड सेक्टर की कंपनियों के ऊपर पड़ रही है। 450 कंपनियों में वर्क फ्रॉम होम लागू कर दिया गया है। केवल सपोर्ट एवं मार्केटिंग स्टाफ को ही आने की इजाजत दी गई है। शनिवार को सभी कंपनियों ने अपने कर्मचारियों के लिए एडवाइजरी जारी कर दी। इसके मुताबिक कर्मचारी न कंपनी आएंगे और न कंपनी के किसी काम से कहीं बाहर जाएंगे। वे फोन एवं वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभी एक-दूसरे के संपर्क में रहेंगे।

यह जानकारी आइटी, आइटी इनेबल्ड एवं टेलीकॉम सेक्टर की कंपनियों के संगठन हाईटेक इंडिया के प्रेसिडेंट प्रदीप यादव ने दैनिक जागरण से बातचीत में दी। उन्होंने बताया कि आइटी, आइटी इनेबल्ड सेक्टर की 600 से अधिक कंपनियां गुरुग्राम में हैं। इनमें से 450 कंपनियों ने शनिवार को अपने कर्मचारियों को कोरोना वायरस से बचाव के बारे में एडवाइजरी कर दी। सपोर्ट एवं मार्केटिंग के स्टाफ को छोड़कर अन्य से कहा गया है कि वे किसी भी हाल में ट्रैवल नहीं करें। टेलीकॉम सेक्टर की भी अधिकतर कंपनियों ने अपने कर्मचारियों के लिए एडवाइजरी कर दी है।

प्रदीप यादव ने कहा कि इस एडवाइजरी से आइटी एवं आइटी इनेबल्ड सेक्टर में 800 करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान होने की आशंका है। डिलिवरी का काम लगभग ठप हो गया है। कॉल सेंटर में काम नहीं के बराबर है। यादव के मुताबिक टैक्सी सर्विस उपलब्ध कराने वाली कंपनियों एवं कैटरर्स को नुकसान नहीं होगा। सभी कंपनियों ने 31 मार्च तक करार के अनुसार पेमेंट करने का निर्णय लिया है। यही नहीं, सभी कर्मचारियों को पूरी सैलरी दी जाएगी। सभी कंपनियां 25 मार्च के बाद अगले कदम पर विचार करेंगी।

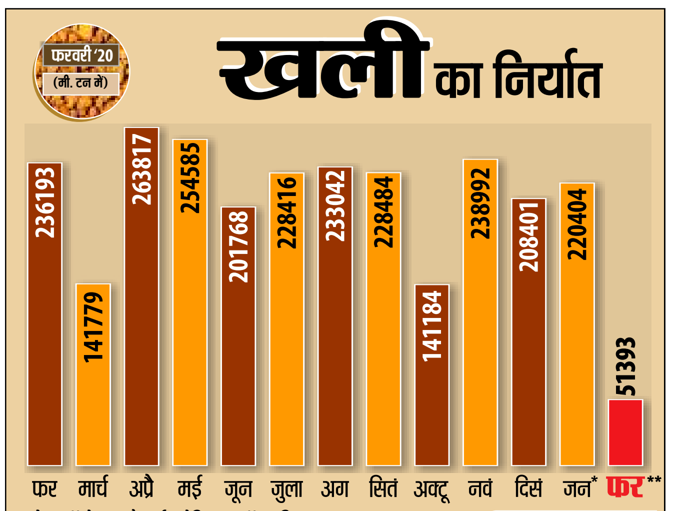

एचएमएसआइ रिकॉल करेगी कुछ स्कूटर

नई दिल्ली, प्रेट्र : होंडा मोटरसाइकल एंड स्कूटर इंडिया (एचएमएसआइ) अपने तीन स्कूटर मॉडल को रिकॉल करने की तैयारी कर रही है। कंपनी ने इन मॉडल्स के रियर कुशन में कुछ गड़बड़ी होने के संदेह पर यह कदम उठाने का फैसला किया है। एचएमएसआइ ने कहा है कि वह इस वर्ष 14 से 25 फरवरी के बीच बनाए गए डियो, एक्टिवा 125 और 6-जी मॉडल्स को रिकॉल करेगी। जानकारी के मुताबिक इस दौरान बने कंपनी के स्कूटर के रियर कुशन में कुछ समस्या की पहचान की गई है। इससे इन स्कूटर्स में ऑयल लीकेज, ब्रेकिंग और वाहन असंतुलित होने की आशंका जताई जा रही है। कंपनी इन स्कूटर्स में कुशन की समस्या ठीक करने के बाद ग्राहकों को वापस कर देगी। इसके लिए ग्राहकों से किसी तरह का शुल्क नहीं लिया जाएगा। इन वाहनों की पहचान के लिए डीलरों की मदद ली जा रही है और संभावित ग्राहकों को फोन और मोबाइल संदेश भेजे जा रहे हैं। गौरतलब है कि एचएमएसआइ दोपहिया वाहन उद्योग की अग्रणी कंपनी है।

कोरोना के चलते घरेलू एयर ट्रैफिक में बड़ी गिरावट की आशंका

▶ नागरिक विमान मंत्री ने कहा – देश का विमानन कारोबार जल्द ही संकट से उबर जाएगा

▶ घरेलू यात्रियों की संख्या में 15-20 परसेंट गिरावट के आसार

हैदराबाद, आइएएनएस : चीन से उपजे कोरोना वायरस के चलते लोग हवाई यात्रा से किनारा कर रहे हैं। नागरिक विमानन मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा है कि कोरोना की वजह से घरेलू एयर ट्रैफिक में 15-20 परसेंट की गिरावट देखने को मिल सकती है। हालांकि इस दौरान उन्होंने कहा कि देश का विमानन कारोबार जल्द ही इस संकट से उबर जाएगा और अपनी तेज रफ्तार वापस हासिल करने में कामयाब रहेगा।

इस बीच, एयरपोर्ट काउंसिल इंटरनेशनल (एसीआइ) के डायरेक्टर स्टेफानो बैरोनसी ने कहा है कि कोरोना के कारण हवाई अड्डे के व्यवसाय को करीब 300 करोड़ रुपये का नुकसान होने का अनुमान है। वर्ष 2018 में 700 करोड़ रुपये का व्यवसाय हुआ था, जबकि इस बार 24 परसेंट की नकारात्मक वृद्धि दर रही है। इससे व्यवसाय को भारी नुकसान हुआ है। कोरोना के कारण भारत समेत एशियाई देशों को लगातार नुकसान हो रहा है।

प्रतीकात्मक

नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री हरदीप सिंह पुरी को लिखे गए पत्र में बैरोनसी ने बताया कि 113 हवाई अड्डों के परिचालकों के प्रतिनिधित्व में एशिया के 49 देशों के हवाई अड्डों के प्रबंधन में सुधार करना है। बैरोनसी ने अपने पत्र में लिखा कि कोरोना वायरस (कोविड-19) के प्रकोप को कम करने और कारोबार में सुधार के लिए हवाई अड्डों के संचालन में स्थिरता होनी चाहिए। एसीआइ के अनुमानों के मुताबिक, एशियाई देश इस वायरस के कारण सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि चीन, कोरिया और हांगकांग एयर ट्रैफिक में बड़े नुकसान के साथ प्रभाव के केंद्र में बने हुए हैं। हवाई अड्डे की सुविधाओं और सेवाओं के संचालन खर्च को ठीक करने के लिए बड़ी पूंजीगत लागत सुनिश्चित करना जरूरी है। वर्तमान में हवाई अड्डों की लागत को पूरा करने के लिए विमान सेवाओं से प्राप्त राजस्व पर्याप्त नहीं है। इस खाई को पाटने के लिए वाणिज्यिक राजस्व एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

चीन के फलों की मांग घटी, स्वदेशी की बढ़ी

राजीव शर्मा, लुधियाना

▶ अमेरिकन सेब और थाईलैंड के ड्रैगन की मांग भी गिरी

▶ किन्नौर के सेब की मांग में इजाफा, दाम भी बढ़े

पूरे विश्व में कोरोना वायरस के प्रभाव से कारोबारी चिंता में हैं। चीन में कामकाज लगभग ठप है। उद्योग बंद हैं और माल का आयात रुका हुआ है। कारोबार पर इसका विपरीत असर हो रहा है। कोरोना के कारण चीन से फलों का आयात पिछले कुछ दिनों से पूरी तरह बंद है, जबकि अन्य विदेशी फलों की मांग में भी गिरावट आई है। इससे स्वदेशी फलों की मांग बढ़ गई है।

दरअसल, कारोबारियों के पास चीन के फलों का पुराना स्टॉक है और उनको कोल्ड स्टोरेज में रखा गया है। लेकिन लोग अब विदेशी फल खरीदने से परहेज कर रहे हैं। हालांकि स्वदेशी सेब की मांग बढ़ी है, जिससे दाम में भी इजाफा हुआ है। चीन से फ्यूजी सेब आ रहा था। तब उसकी घरेलू बाजार में होलसेल कीमत 1,800 रुपये प्रति 10 किलो थी। चाइनीज अंगूर भी 1,800 से 2,500 रुपये प्रति 10 किलो के भाव पर मिल रहा था। आम 250 रुपये, लीची 120 रुपये मैंगो स्टीम 400 रुपये प्रति किलो में मिल रहे थे।

कुछ माल पोर्ट पर अटका, नहीं हो रही बिक्री : कारोबारियों का तर्क है कि फरवरी में चीन के फलों की अंतिम बार आपूर्ति हुई। इसके बाद इन पर ब्रेक लग गई। अब जो माल पोर्ट पर अटका है या कारोबारियों के पास है, उसकी भी बिक्री नहीं हो रही है। लोगों ने चीन के फलों से दूरी बना ली है। पंजाब फ्रूट एंड वेजिटेबल कमीशन एजेंट्स एसोसिएशन के महासचिव अमरवीर सिंह का कहना है कि कोरोना ने विदेशी फलों की मार्केट लगभग खत्म कर दी है। लुधियाना में चीन के फलों का फरवरी तक दो ट्रक माल रोजाना आ रहा था, लेकिन अब सप्लाई बंद है।

ड्रैगन फ्रूट की प्रतीकात्मक फोटो

कैलिफोर्निया के सेब व ऑस्ट्रेलियन अंगूर भी आ रहे कम : अब कैलिफोर्निया एवं वाशिंगटन के सेब और ऑस्ट्रेलियन अंगूर भी कम आ रहे हैं। कैलिफोर्निया का सेब 1,600 रुपये प्रति 10 किलो, वाशिंगटन सेब 1,700 रुपये प्रति 10 किलो एवं ऑस्ट्रेलियन अंगूर 2,300 रुपये प्रति 13 किलो की पेटी में मिल रहे हैं, लेकिन इनकी मांग में भी 50 फीसद तक गिरावट आई है। थाइलैंड से अमरूद एवं ड्रैगन की आमद भी काफी कम हो गई है। अमरूद का दाम पहले 130 रुपये प्रति किलो था, जो अब 70 रुपये रह गया है। ड्रैगन के दाम 2,200 रुपये प्रति 15 किलो से गिरकर 600 रुपये रह गया हैं। इनकी भी मांग काफी कम है।

भारतीय फलों की मांग जोर पकड़ रही : फल कारोबारी गुरप्रीत सिंह का तर्क है कि विदेशी फलों की मांग कम होने के चलते अब स्वदेशी फलों की मांग जोर पकड़ रही है। किन्नौर के सेब का दाम 15 दिन पहले एक हजार रुपये प्रति 13 किलो था, अब बढ़कर 1,500 रुपये पर पहुंच गए हैं।

माइक्रोसॉफ्ट के बोर्ड से बिल गेट्स का इस्तीफा

सैन फ्रांसिस्को, एएफपी : माइक्रोसॉफ्ट के सह-संस्थापक बिल गेट्स ने कंपनी के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स (निदेशक मंडल) से इस्तीफा दे दिया है। कंपनी का कहना है कि वह अपना ज्यादा समय लोगों की भलाई के काम में देना चाहते हैं, इसीलिए वह इस जिम्मेदारी से मुक्त हो रहे हैं। हालांकि वह कंपनी के सीईओ सत्या नडेला के तकनीकी सलाहकार के रूप में काम करते रहेंगे।

बिल गेट्स ने एक दशक पहले ही कंपनी के रोजमर्रा के कामकाज में हिस्सा लेना बंद कर दिया था और अपना ज्यादातर समय पत्नी मेलिंडा के साथ शुरू किए गए फाउंडेशन को देने लगे थे। वह 2014 की शुरुआत तक कंपनी के निदेशक मंडल के प्रेसिडेंट रहे, लेकिन अब वह कंपनी के कामकाज से पूरी तरह अलग हो रहे हैं। माइक्रोसॉफ्ट के मुख्य कार्यकारी सत्य नडेला ने एक विज्ञप्ति में कहा, 'बिल गेट्स के साथ काम करना गौरव की बात है। गेट्स ने इस कंपनी की स्थापना सॉफ्टवेयर के जरिये लोगों की परेशानियों को दूर करने के उद्देश्य से की थी।

मौजूदा दौर में निवेश को लेकर अतिरिक्त सावधानी बरतने का समय

आजकल शेयर बाजारों में जबरदस्त उठापटक देखने को मिल रही है। दैनिक गिरावट या उछाल तो हो ही रहा है, शेयर कुछ ही घंटों में अर्श और फर्श का सफर करते नजर आ रहे हैं। ऐसे समय में कोई इस तथ्य से इन्कार नहीं कर सकता कि यह मार्केट में खलबली मचने का समय है। लेकिन इन सबके बावजूद एक बात हमें थोड़ा संतोष जरूर देती है कि बाजार में पहले भी ऐसे भूचाल आ चुके हैं और निवेशक उनसे उबरने में सफल रहे हैं। चीजें कितनी भी बेरंग क्यों न हों, पासा पलटना तो निश्चित है। ऐसे में मार्केट को पटरी पर लौटने की उम्मीद लगाना कोई बेमानी नहीं है।

शेयर बाजारों में जब-जब बड़ी हलचलें हुई हैं कुछ नया देखने को मिला है। लेकिन कोरोना के चलते पैदा हुए हालात कुछ अलग कहे जा सकते हैं। इस बार बाजार धड़ाम होने का कारण बाहरी है। वैसे इक्विटी निवेश हमेशा जोखिम का विषय होता है। जब हम शेयर बाजार में निवेश करते हैं तो मुनाफे के साथ ही जोखिम को भी दावत देते हैं और हमें इसकी संभावना को नकारना भी नहीं चाहिए। बिना जोखिम उठाए मुनाफे की उम्मीद करना तर्कसंगत नहीं होगा। शेयर बाजार में किया गया निवेश हमेशा इकोनॉमी और कारोबार के बेहतर प्रदर्शन का मोहताज होता है। इसके अलावा कुछ अन्य बाहरी वजहें भी इसे प्रभावित करती हैं। हम निवेशकों को अक्सर यह भ्रम हो जाता है कि इक्विटी में जोखिम केवल आर्थिक जगत की उपज होता है। जबकि असल में हर बार ऐसा होता नहीं हैं। अब कोरोना के मामले को ही ले लें। यह सीधे तौर पर वित्तीय बाजारों की समस्या नहीं था। लेकिन अंत में हुआ क्या? चीन से उपजा यह संकट देखते ही देखते दुनियाभर में फैल गया और ग्लोबल शेयर मार्केट को गंभीर संकट में डाल दिया। यह स्थिति वर्ष 2001 या 2008 के संकट से एकदम अलग है। उस दौरान वित्तीय जगत से उभरे संकट पर जल्द ही काबू पा लिया गया था। लेकिन इस बार फिलहाल ऐसा होता नहीं दिख रहा।

धीरेंद्र कुमार, सीईओ
वैल्यू रिसर्च

बोनस

कोरोना के प्रकोप के चलते वैश्विक अर्थव्यवस्था में गिरावट की आशंका के कारण ग्लोबल शेयर बाजारों में हाहाकार मचा हुआ है। ऐसी स्थिति में कोई भी निश्चित अनुमान लगाना आसान नहीं है। यह संकट कब तक बना रहेगा और इसका प्रभाव कितना गहरा होगा, इस पर कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी। फिलहाल मौजूदा हालात को देखते हुए यह और गहराता हुआ नजर आ रहा है। ऐसे में निवेश को लेकर अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत है। जोश में आकर किसी तरफ बह जाना सही नहीं है। निवेशकों को मूल सिद्धांतों के इर्दगिर्द रहकर ही निवेश का फैसला लेना चाहिए।

बाजार पर छाए संकट के इन बादलों को लेकर कोई टिप्पणी करना आसान नहीं है। यह स्थिति कब तक बनी रहेगी और इसका प्रभाव कितना गहरा होगा कुछ कहा नहीं जा सकता। वैश्विक अर्थव्यवस्था पर कोरोना का उग्र रूप अभी आना शेष हो सकता है। इसके चलते इकोनॉमी को अब तक हुए नुकसान का अंदाजा भी लगाना आसान नहीं है। आने वाले कुछ समय में स्थिति और साफ होगी। हाल में गूगल ने दक्षिण अमेरिका के अपने 10 हजार कर्मचारियों को घर से ही काम करने को कहा है। इस दौरान वे कर्मचारी ऑफिस आएंगे जिनका कार्य घर से संभव नहीं है। मुझे आशंका है कि आने वाले कुछ दिनों में सभी टेक्नोलॉजी कंपनियों को ऐसी घोषणा करनी पड़ सकती है।

घर से काम करने वाले कर्मचारी कब वापस लौटेंगे? क्या आगे से काम करने का पैटर्न बदल तो नहीं जाएगा? ऑफिस के लिए ढांचागत व्यवस्था देने वाले कारोबार पर इसका क्या प्रभाव होगा? ऐसे बहुत से सवाल हैं, जिनपर फिलहाल कुछ भी नहीं कहा जा सकता। हम इस समय कोरोना संकट के प्राथमिक दौर से ही गुजर रहे हैं। आगे चलकर यह संकट कौन सा मोड़ लेगा, इकोनॉमी को यह कितनी चोट पहुंचाएगा? इन सवालों का जवाब भविष्य की गर्त में छुपा है।

एक निवेशक के रूप में हमें यह मानकर चलना चाहिए कि यह वास्तविक ऊहापोह की स्थिति है। ऐसे समय बाजार के जानकार अलग-अलग मतों के साथ सामने आएंगे। इनमें कुछ निवेश को लेकर आशावादी नजरिया पेश करेंगे तो कुछ निवेश से दूर रहने की सलाह देंगे। अब आपको कौन सा रास्ता चुनना है इसका निर्णय पूरी तरह से आपकी मनोदशा पर निर्भर करता है। हालांकि मैं यही कहूंगा कि ऐसे में धैर्य रखने की जरूरत है। जोश में आकर किसी तरफ बह जाना सही नहीं है। शेयर बाजारों के जो हालात हैं वे कब तक जारी रहेंगे और कहां तक जाएंगे कुछ कहा नहीं जा सकता। इस समय सबसे बेहतर यही होगा कि मूल बातों को ध्यान में रखा जाए। कोरोना के प्रकोप के बाद भी जीवन चल रहा है, रोजाना की गतिविधियां जारी हैं। हालांकि वही चीजें अब दूसरे तरीकों से या अतिरिक्त सावधानी के साथ हो रही हैं। इसी तरह से आर्थिक गतिविधियां भी जारी रहेंगी, लेकिन सावधानी के साथ। ऐसे समय में सावधानीपूर्वक किए गए गुणवत्तापूर्ण निवेश से बेहतर रिटर्न प्राप्त किया जा सकता है।